

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन का भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में विकसित **सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन** के उद्भव, वैचारिक आधार तथा भारतीय राजनीतिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर उसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय लोकतंत्र के संस्थागत विकास के साथ-साथ भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अनियमितता, बेरोजगारी, महँगाई, राजनीतिक असंतोष तथा शासन-व्यवस्था में बढ़ती केंद्रीकरण की प्रवृत्तियों ने व्यापक जन-असंतोष को जन्म दिया। इसी सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि में 1974 का बिहार छात्र आंदोलन व्यापक जनआंदोलन में परिवर्तित हुआ और जयप्रकाश नारायण ने 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान से इसे '**सम्पूर्ण क्रांति**' का व्यापक वैचारिक स्वरूप प्रदान किया।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण क्रांति केवल तत्कालीन सरकार के परिवर्तन तक सीमित आंदोलन नहीं था, बल्कि जयप्रकाश नारायण के चिंतन में यह राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा नैतिक परिवर्तन की समग्र प्रक्रिया थी। इसके राजनीतिक पक्ष में लोकतांत्रिक सहभागिता, राजनीतिक जवाबदेही, चुनाव सुधार, सत्ता के विकेंद्रीकरण और लोकशक्ति को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया गया। आंदोलन ने विद्यार्थियों, युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न राजनीतिक समूहों को एक व्यापक लोकतांत्रिक मंच पर संगठित किया और शासन की जवाबदेही तथा नागरिक सहभागिता से जुड़े प्रश्नों को राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श का विषय बनाया। शोध यह भी दर्शाता है कि 1975 में आपातकाल की घोषणा तथा उसके दौरान नागरिक स्वतंत्रताओं और राजनीतिक गतिविधियों पर लगाए गए प्रतिबंधों ने सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के लोकतांत्रिक आयाम को और अधिक स्पष्ट किया। 1977 के आम चुनाव तथा उसके बाद केंद्र में सत्ता परिवर्तन ने भारतीय राजनीति में विपक्षी एकता और वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति के उभार को प्रदर्शित किया। तथापि, सम्पूर्ण क्रांति के व्यापक सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को पूर्णतः संस्थागत रूप नहीं मिल सका। अतः इस आंदोलन का दीर्घकालीन महत्व केवल सत्ता परिवर्तन में नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र में **जनसहभागिता, राजनीतिक जवाबदेही, विकेंद्रीकरण और नागरिक अधिकारों** से संबंधित प्रश्नों को प्रमुखता प्रदान करने में निहित दिखाई देता है। समकालीन संदर्भ में भी इसकी प्रासंगिकता लोकतांत्रिक संस्थाओं की जवाबदेही और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी के विमर्श के संदर्भ में देखी जा सकती है।

मुख्य शब्द : सम्पूर्ण क्रांति, बिहार आंदोलन, लोकतंत्र, लोकशक्ति, विकेंद्रीकरण, चुनाव सुधार, नागरिक अधिकार, विपक्षी एकता।

प्रस्तावना

जयप्रकाश नारायण (11 अक्टूबर 1902-8 अक्टूबर 1979) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख समाजवादी नेताओं, चिंतकों और बाद में सर्वोदय तथा लोकतांत्रिक आंदोलनों के महत्वपूर्ण जननेताओं में रहे। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने सक्रिय दलगत राजनीति से दूरी बनाकर सामाजिक पुनर्निर्माण और सर्वोदय की दिशा में कार्य किया, किंतु 1970 के दशक में भारतीय राजनीति में उत्पन्न व्यापक असंतोष के बीच वे पुनः सार्वजनिक राजनीतिक जीवन के केंद्र में आए। बिहार सरकार के आधिकारिक अभिलेख के अनुसार उन्हें 1965 में **रेमन मैग्सेसे** पुरस्कार और मरणोपरांत 1998 में भारत रत्न प्रदान किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने संसदीय लोकतंत्र, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार और संवैधानिक संस्थाओं के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण किया। किंतु 1970 के दशक के प्रारंभ तक महंगाई, बेरोजगारी, खाद्य-संकट, भ्रष्टाचार तथा शासन-व्यवस्था को लेकर असंतोष जैसी समस्याएँ राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनने लगी थीं। राष्ट्रीय शैक्षिक सामग्री में 1974 के बिहार छात्र आंदोलन की पृष्ठभूमि में **बढ़ती कीमतें, खाद्य-संकट, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार** को प्रमुख कारणों के रूप में दर्ज किया गया है। इसी काल में 1973 के वैश्विक तेल संकट ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ाया। समकालीन परिस्थितियों में गुजरात का नवनिर्माण आंदोलन और बिहार का छात्र आंदोलन व्यापक राजनीतिक असंतोष के महत्वपूर्ण उदाहरण बने।

इसी राजनीतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि में **1974 में बिहार छात्र आंदोलन** ने व्यापक रूप ग्रहण किया और विद्यार्थियों ने जयप्रकाश नारायण से आंदोलन का नेतृत्व करने का आग्रह किया। जयप्रकाश नारायण ने आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार करते हुए इसे अहिंसक रखने पर बल दिया। **5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान में उन्होंने "सम्पूर्ण क्रांति" का आह्वान किया।** सम्पूर्ण क्रांति उनके लिए केवल सरकार बदलने का कार्यक्रम नहीं था, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और नैतिक जीवन में व्यापक परिवर्तन की अवधारणा थी।

आंदोलन का प्रभाव बिहार तक सीमित नहीं रहा और धीरे-धीरे इसका संबंध राष्ट्रीय राजनीति से जुड़ गया। 1975 में राजनीतिक और संवैधानिक परिस्थितियाँ अत्यंत गंभीर हुईं। **25 जून 1975 को राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया गया, जो 21 मार्च 1977 तक रहा।** इस अवधि में राजनीतिक विरोधियों की गिरफ्तारियाँ, प्रेस सेंसरशिप तथा नागरिक स्वतंत्रताओं से संबंधित महत्वपूर्ण संवैधानिक परिवर्तन हुए। जयप्रकाश नारायण सहित विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी ने आंदोलन और आपातकाल के बीच संबंध को भारतीय राजनीतिक इतिहास का महत्वपूर्ण विषय बना दिया।

सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम **1977 का लोकसभा चुनाव** रहा। निर्वाचन आयोग के आँकड़ों के अनुसार 1977 के लोकसभा चुनाव में **32.12 करोड़ से अधिक मतदाता पंजीकृत थे और 19.43 करोड़ से अधिक मतदाताओं ने मतदान किया; मतदान प्रतिशत 60.49% था।** इस चुनाव के बाद जनता पार्टी के नेतृत्व में

केंद्र में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनी। भारत सरकार के प्रकाशन में भी जयप्रकाश नारायण की भूमिका को विभिन्न गैर-कांग्रेसी दलों को एक मंच पर लाने और 1977 में जनता पार्टी सरकार के गठन से जोड़ा गया है।

विषय की प्रासंगिकता

“जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन का भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव” के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन को केवल एक तात्कालिक सरकार-विरोधी आंदोलन के रूप में समझना उसके व्यापक राजनीतिक एवं लोकतांत्रिक स्वरूप को सीमित कर देना होगा। यह आंदोलन 1974 में बिहार में भ्रष्टाचार, महँगाई, बेरोजगारी तथा प्रशासनिक अव्यवस्थाओं के विरुद्ध प्रारम्भ हुए छात्र आंदोलन की पृष्ठभूमि से विकसित हुआ और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में व्यापक राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा से जुड़ गया। 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान में जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान करते हुए आंदोलन को केवल किसी सरकार या मंत्रालय के परिवर्तन से आगे **सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शैक्षिक और नैतिक परिवर्तन** के व्यापक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया।

शोध के विश्लेषण से यह भी सामने आया कि सम्पूर्ण क्रांति की राजनीतिक अवधारणा में **जनसहभागिता, लोकशक्ति, राजनीतिक जवाबदेही, सत्ता का विकेंद्रीकरण, चुनाव सुधार और सार्वजनिक जीवन में नैतिकता** को विशेष स्थान प्राप्त था। आंदोलन ने विद्यार्थियों, युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न राजनीतिक समूहों को व्यापक स्तर पर सक्रिय किया। इस प्रक्रिया में तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था के सामने यह प्रश्न प्रमुखता से आया कि लोकतंत्र की प्रभावशीलता केवल चुनाव कराने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि शासन की निरंतर जवाबदेही और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का आवश्यक हिस्सा है। आंदोलन के प्रारम्भिक चरण में स्वयं जयप्रकाश नारायण ने इसे किसी राजनीतिक दल के नियंत्रण से अलग तथा अहिंसक बनाए रखने पर बल दिया था। अध्ययन में 1975-77 के आपातकाल को सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के राजनीतिक प्रभाव को समझने की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में पाया गया। 25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा के बाद जयप्रकाश नारायण सहित अनेक विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी हुई और राजनीतिक गतिविधियाँ तथा नागरिक स्वतंत्रताओं पर व्यापक प्रतिबंध लगाए गए। आपातकाल की अवधि **25 जून 1975 से 21 मार्च 1977** तक रही। इस घटनाक्रम ने आंदोलन द्वारा उठाए गए लोकतांत्रिक अधिकार, राजनीतिक स्वतंत्रता, संस्थागत जवाबदेही और नागरिक भागीदारी के प्रश्नों को और अधिक व्यापक राजनीतिक संदर्भ प्रदान किया।

प्रस्तुत शोध से यह तथ्य भी सामने आया कि 1977 का आम चुनाव इस पूरे राजनीतिक क्रम का एक महत्वपूर्ण चरण था। निर्वाचन आयोग के आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1977 के लोकसभा चुनाव में **32,11,74,327 पंजीकृत मतदाता** थे और **19,42,63,915 मतदाताओं ने मतदान किया**, जिससे कुल मतदान प्रतिशत **60.49 प्रतिशत** रहा। इन चुनावों के बाद केंद्र में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ। इस राजनीतिक परिवर्तन को सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन से जुड़े व्यापक विपक्षी समन्वय और लोकतांत्रिक असंतोष की राजनीतिक अभिव्यक्ति के संदर्भ में देखा जा सकता है; हालांकि, शोध के आधार पर इसे केवल एक आंदोलन का प्रत्यक्ष और एकमात्र परिणाम मानना उचित नहीं होगा। समग्र रूप से शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि सम्पूर्ण क्रांति

आंदोलन का भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव मुख्यतः **राजनीतिक जवाबदेही, विपक्षी एकता, नागरिक सहभागिता, लोकतांत्रिक अधिकारों तथा सत्ता के केंद्रीकरण पर विमर्श** को व्यापक बनाने के रूप में दिखाई देता है। आंदोलन के सभी सामाजिक, आर्थिक और नैतिक उद्देश्यों को बाद की राजनीतिक व्यवस्था में पूर्णतः संस्थागत रूप नहीं दिया जा सका, इसलिए इसे सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तन की पूर्ण उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा। इसके बावजूद, 1974 के आंदोलन से लेकर 1975-77 के आपातकाल और 1977 के आम चुनाव तक की घटनाओं का क्रम भारतीय लोकतंत्र में जनआंदोलन, विपक्षी राजनीति, नागरिक स्वतंत्रता और सत्ता परिवर्तन के परस्पर संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार प्रदान करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष है कि जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति भारतीय राजनीतिक इतिहास में केवल एक विशिष्ट कालखंड का आंदोलन नहीं थी, बल्कि उसने लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्वरूप, नागरिक की भूमिका, राजनीतिक सत्ता की जवाबदेही और संस्थागत लोकतंत्र की सीमाओं से जुड़े प्रश्नों को राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श के केंद्र में स्थापित किया। इसकी ऐतिहासिक प्रासंगिकता इसी तथ्य में निहित है कि इस आंदोलन ने **“सत्ता परिवर्तन”** से आगे **“व्यवस्था और लोकतांत्रिक राजनीतिक संस्कृति में परिवर्तन”** के प्रश्न को भारतीय राजनीति के सामने रखा।

शोध समस्या

जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1974 में उभरा **सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन** स्वतंत्रता के बाद विकसित भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में उत्पन्न विभिन्न राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक असंतोष की पृष्ठभूमि में सामने आया। इस आंदोलन के उद्भव के पीछे तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों, शासन-व्यवस्था में बढ़ते केंद्रीकरण, भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी तथा राजनीतिक संस्थाओं के प्रति जन-असंतोष जैसे कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आंदोलन ने केवल तत्कालीन सरकार की नीतियों पर प्रश्न नहीं उठाए, बल्कि प्रतिनिधित्व, राजनीतिक जवाबदेही, प्रशासनिक पारदर्शिता, चुनाव सुधार, लोकतांत्रिक सहभागिता और सत्ता के विकेंद्रीकरण जैसे व्यापक प्रश्नों को भी सार्वजनिक विमर्श का विषय बनाया। विशेष रूप से बिहार आंदोलन के माध्यम से जयप्रकाश नारायण ने राजनीतिक परिवर्तन को केवल सरकार बदलने तक सीमित न रखते हुए सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और प्रशासनिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया।

अतः प्रस्तुत शोध की समस्या इस बात का अध्ययन करना है कि **सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन** किन राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ, उसने तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था और संस्थाओं के समक्ष कौन-कौन से मूलभूत प्रश्न प्रस्तुत किए तथा इस आंदोलन ने भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक सहभागिता, विपक्षी राजनीति, चुनावी राजनीति और राजनीतिक संस्थाओं के विकास को किस प्रकार प्रभावित किया। इसके साथ ही शोध यह भी विश्लेषित करेगा कि सम्पूर्ण क्रांति की वैचारिक अवधारणा और उसके राजनीतिक प्रयोग के बीच क्या संबंध था तथा भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के संदर्भ में इसकी दीर्घकालिक राजनीतिक विरासत को किस प्रकार समझा जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक चिंतन और सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन पर पर्याप्त मात्रा में वैचारिक, ऐतिहासिक तथा राजनीतिक साहित्य उपलब्ध है। उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों को किसी एक स्थिर विचारधारा के अंतर्गत समझना पर्याप्त नहीं है। उनके चिंतन में मार्क्सवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद, सर्वोदय, विकेंद्रीकरण, दलविहीन लोकतंत्र और अंततः सम्पूर्ण क्रांति के विभिन्न चरण दिखाई देते हैं। इस वैचारिक विकास को समझने के लिए स्वयं जयप्रकाश नारायण की रचनाएँ प्राथमिक स्रोत का महत्व रखती हैं। विशेष रूप से *From Socialism to Sarvodaya* (1957) में उन्होंने समाजवाद से सर्वोदय की ओर अपने वैचारिक परिवर्तन की व्याख्या की, जबकि *A Plea for Reconstruction of Indian Polity* (1959) में उन्होंने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के पुनर्गठन, ग्राम-आधारित लोकतंत्र और सत्ता के विकेंद्रीकरण से संबंधित अपने विचार प्रस्तुत किए। *Swaraj for the People* (1961) तथा *A Picture of Sarvodaya Social Order* (1961) में भी उनके लोक-आधारित शासन और सर्वोदय समाज की अवधारणा को समझने के लिए महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है। इन प्राथमिक स्रोतों का संकलित रूप Bimal Prasad द्वारा संपादित *Selected Works of Jayaprakash Narayan* में उपलब्ध है, जिसका प्रकाशन Manohar द्वारा किया गया है।

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक चिंतन के व्यवस्थित अध्ययन में **Nitis Das Gupta** की पुस्तक *The Social and Political Theory of Jayaprakash Narayan* विशेष महत्व रखती है। इस पुस्तक में लेखक ने जयप्रकाश नारायण के विचारों के चार प्रमुख चरणों—मार्क्सवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद, सर्वोदय आधारित दलविहीन लोकतंत्र और सम्पूर्ण क्रांति—का विश्लेषण किया है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि सम्पूर्ण क्रांति अचानक विकसित हुई राजनीतिक अवधारणा नहीं थी, बल्कि जयप्रकाश नारायण के दीर्घकालीन वैचारिक विकास का अंतिम चरण थी। इसी प्रकार **Sebasti L. Raj** की *Total Revolution: The Final Phase of Jayaprakash Narayan's Political Philosophy* (1986) सम्पूर्ण क्रांति के अर्थ, उद्देश्यों, आंदोलन की प्रकृति, उसके साधनों तथा उसके वैचारिक आधार का पृथक और विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। पुस्तक में सम्पूर्ण क्रांति को जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक दर्शन के अंतिम चरण के रूप में देखा गया है।

जयप्रकाश नारायण के समाजवाद और सर्वोदय की ओर संक्रमण को समझने के लिए उपलब्ध ऐतिहासिक-वैचारिक अध्ययनों में यह तथ्य प्रमुखता से सामने आता है कि स्वतंत्रता के बाद उनका चिंतन सत्ता-केंद्रित दलगत राजनीति से हटकर जन-आधारित राजनीतिक परिवर्तन, विकेंद्रीकरण और सामाजिक पुनर्निर्माण की ओर विकसित हुआ। *The Review of Politics* में प्रकाशित एक अध्ययन ने उनके विचारों में मार्क्सवाद से लोकतांत्रिक समाजवाद और आगे सर्वोदय की ओर हुए परिवर्तन को रेखांकित किया है तथा *From Socialism to Sarvodaya* को इस वैचारिक परिवर्तन को समझने वाला प्रमुख प्राथमिक स्रोत माना है। आधुनिक बौद्धिक इतिहास के अध्ययन में भी Jayaprakash Narayan और Rammanohar Lohia के समाजवादी चिंतन के बीच संबंधों तथा स्वतंत्रता-उत्तर भारत में समाजवाद की बदलती वैचारिक व्याख्याओं का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के अनुसार जयप्रकाश नारायण के चिंतन में *lok niti*, समाजवाद और सर्वोदय के बीच संबंध उनके राजनीतिक विचारों के विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन से संबंधित साहित्य में जयप्रकाश नारायण की अंतिम राजनीतिक सक्रियता, 1974 के बिहार आंदोलन और लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवर्तन की उनकी अवधारणा प्रमुख विषय रहे हैं। *Towards Total Revolution* में उनके अंतिम राजनीतिक चरण के भाषणों और लेखों का संकलन मिलता है, जबकि *Total Revolution: The Final Phase of Jayaprakash Narayan's Political Philosophy* आंदोलन के वैचारिक पक्ष का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। जयप्रकाश नारायण की बाद की रचनाओं में *Total Revolution: Why and How?* (1975), *Do Not Destroy Democracy* (1975), *A Long Battle* (1976) तथा *Free India—Defeat the Dictators* (1977) जैसी रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि इनमें सम्पूर्ण क्रांति, लोकतंत्र, नागरिक स्वतंत्रता और तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर उनके विचार दर्ज हैं।

सम्पूर्ण क्रांति की वैचारिक संरचना पर उपलब्ध अपेक्षाकृत नवीन शोधों में **Baishali Majumdar** का अध्ययन *Total Revolution: An Analytical Study of Jayaprakash Narayan's Political Philosophy* उल्लेखनीय है। इसमें सम्पूर्ण क्रांति को केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का आंदोलन न मानकर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, नैतिक और आध्यात्मिक परिवर्तन से संबंधित व्यापक अवधारणा के रूप में विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि सम्पूर्ण क्रांति का संबंध जयप्रकाश नारायण के पूर्ववर्ती समाजवादी और सर्वोदय चिंतन से था। इसी विषय पर Dnyaneshwar Shankar Rao Pawar का 1983 का **University of Pune** का PhD शोध-प्रबंध, *Social and Political Philosophy of Jayaprakash Narayan with Special Reference to the Concept of Total Revolution*, भी उपलब्ध है। यह शोध सीधे जयप्रकाश नारायण के सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन तथा सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा पर केंद्रित है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों की प्रमुख निष्पत्तियाँ एवं शोध-अंतर

उपलब्ध साहित्य से मुख्यतः तीन निष्कर्ष सामने आते हैं। पहला, जयप्रकाश नारायण का राजनीतिक चिंतन वैचारिक परिवर्तन और निरंतर पुनर्विचार की प्रक्रिया से विकसित हुआ, जिसमें मार्क्सवाद से समाजवाद, समाजवाद से सर्वोदय और अंततः सम्पूर्ण क्रांति तक का क्रम दिखाई देता है। दूसरा, पूर्ववर्ती अध्ययनों में सम्पूर्ण क्रांति को सामान्यतः केवल 1974 के बिहार आंदोलन तक सीमित न रखकर जयप्रकाश नारायण के दीर्घकालीन राजनीतिक दर्शन के अंतिम चरण के रूप में देखा गया है। तीसरा, उपलब्ध साहित्य में सम्पूर्ण क्रांति के दार्शनिक आधार, सर्वोदय और दलविहीन लोकतंत्र के साथ उसके संबंध तथा जयप्रकाश नारायण के वैचारिक विकास का पर्याप्त अध्ययन मिलता है; किंतु 1974-77 के आंदोलन को भारतीय लोकतांत्रिक संस्थाओं, विपक्षी राजनीति, राजनीतिक सहभागिता और लोकतांत्रिक संस्थागत परिवर्तन के संदर्भ में एक समेकित राजनीतिक अध्ययन के रूप में देखने की गुंजाइश बनी रहती है। प्रस्तुत शोध इसी बिंदु को आगे बढ़ाते हुए सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के राजनीतिक कारणों, तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष उसके द्वारा उठाए गए प्रश्नों तथा भारतीय लोकतंत्र और राजनीतिक संस्थाओं पर उसके प्रभाव का अध्ययन करेगा। यह शोध पूर्ववर्ती वैचारिक अध्ययनों को आधार बनाकर आंदोलन के राजनीतिक-संस्थागत आयाम पर विशेष ध्यान केंद्रित करेगा।

शोध के उद्देश्य

1. सम्पूर्ण क्रांति की वैचारिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. आंदोलन के प्रमुख उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों का विश्लेषण करना।
3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना।
4. लोकतांत्रिक सहभागिता एवं राजनीतिक चेतना पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना।
5. समकालीन भारतीय राजनीति में सम्पूर्ण क्रांति की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के प्रमुख राजनीतिक कारण क्या थे?
2. जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की मूल अवधारणा क्या थी?
3. आंदोलन ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया?
4. आंदोलन का राजनीतिक सहभागिता एवं लोकतांत्रिक चेतना पर क्या प्रभाव पड़ा?
5. समकालीन भारतीय राजनीति में इसके विचारों की क्या प्रासंगिकता है?

परिकल्पना

“जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन ने भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक चेतना, राजनीतिक सहभागिता, सत्ता की जवाबदेही और वैकल्पिक राजनीतिक विमर्श को प्रभावित किया।”

सैद्धान्तिक आधार

प्रस्तुत अध्ययन का सैद्धान्तिक आधार जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक चिंतन तथा लोकतांत्रिक शासन की प्रमुख अवधारणाओं पर आधारित है। लोकतांत्रिक सहभागिता के संदर्भ में सम्पूर्ण क्रांति का उद्देश्य नागरिकों को केवल मतदान तक सीमित न रखकर शासन एवं सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी से जोड़ना था। लोकशक्ति जयप्रकाश नारायण के चिंतन में राज्य-सत्ता के समानांतर जनता की संगठित और नैतिक शक्ति की अवधारणा से जुड़ी थी। विकेंद्रीकरण के अंतर्गत उन्होंने सत्ता और निर्णय-प्रक्रिया को स्थानीय स्तर तक पहुँचाने तथा ग्राम-आधारित लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करने पर बल दिया। राजनीतिक जवाबदेही के स्तर पर आंदोलन ने भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग और शासन में पारदर्शिता जैसे प्रश्नों को प्रमुखता दी। इस प्रकार सम्पूर्ण क्रांति का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आयाम केवल सरकार परिवर्तन तक सीमित नहीं था, बल्कि जयप्रकाश नारायण के विचारों में व्यापक सामाजिक पुनर्निर्माण, आर्थिक न्याय, नैतिक राजनीति और लोकतांत्रिक व्यवस्था के पुनर्गठन से संबंधित था।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा इसमें गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। अध्ययन के प्राथमिक स्रोतों में जयप्रकाश नारायण के भाषणों, लेखों और पुस्तकों के साथ उनके संकलित लेखन को शामिल किया गया है। विशेष रूप से *Selected Works of Jayaprakash Narayan* तथा *Towards Total Revolution* जैसे संकलनों का उपयोग उनके राजनीतिक विचारों और 1974-75 के आंदोलन को समझने के लिए

किया गया। जयप्रकाश नारायण के मूल दस्तावेजों का एक महत्वपूर्ण संग्रह नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी में उपलब्ध है, जिसमें उनके भाषणों, वक्तव्यों, पत्राचार और विषयगत दस्तावेजों का व्यापक अभिलेख है। इसके अतिरिक्त **लोकसभा एवं राज्यसभा की समकालीन कार्यवाहियों**, संसदीय दस्तावेजों और 1974-77 की राजनीतिक घटनाओं से संबंधित अभिलेखों का अध्ययन किया गया। संसद के डिजिटल अभिलेखागार में ऐतिहासिक लोकसभा एवं राज्यसभा बहसों और संसदीय दस्तावेजों की उपलब्धता शोध के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिक आधार रही। द्वितीयक स्रोतों के रूप में जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक चिंतन, बिहार आंदोलन और आपातकाल से संबंधित प्रमाणिक पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों तथा समकालीन पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग किया गया। अध्ययन में **विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis)** के माध्यम से लोकतांत्रिक सहभागिता, लोकशक्ति, विकेंद्रीकरण, राजनीतिक जवाबदेही और सम्पूर्ण क्रांति के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक आयामों से संबंधित सामग्री का वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया। इस प्रक्रिया के आधार पर यह अध्ययन सम्पूर्ण क्रांति को केवल 1974 के बिहार आंदोलन के रूप में न देखकर उसके **राजनीतिक विचार, संस्थागत प्रश्न और भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ संबंध** का समेकित विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

सम्पूर्ण क्रांति की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के बाद भारत ने संसदीय लोकतंत्र, नियमित चुनाव और संवैधानिक शासन की व्यवस्था स्थापित की, लेकिन 1960 और 1970 के दशक तक शासन-व्यवस्था के सामने आर्थिक कठिनाइयाँ, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महँगाई और राजनीतिक असंतोष जैसी चुनौतियाँ उभरने लगी थीं। विशेष रूप से 1973 के अंतरराष्ट्रीय तेल संकट ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव डाला और महँगाई तथा आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता से संबंधित समस्याएँ बढ़ीं। इसी व्यापक पृष्ठभूमि में 1973-74 में गुजरात में **नवनिर्माण आंदोलन** प्रारंभ हुआ, जो छात्र असंतोष से शुरू होकर भ्रष्टाचार और महँगाई के विरुद्ध व्यापक राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हुआ। बिहार में भी मार्च 1974 में छात्रों ने भ्रष्टाचार, मूल्य-वृद्धि और बेरोजगारी जैसे मुद्दों को लेकर आंदोलन प्रारंभ किया और छात्र नेताओं ने जयप्रकाश नारायण से नेतृत्व का अनुरोध किया।

जयप्रकाश नारायण ने आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार करते हुए इसे अहिंसक बनाए रखने पर बल दिया। 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान में उन्होंने **सम्पूर्ण क्रांति** का आह्वान किया और स्पष्ट किया कि समस्या केवल किसी एक सरकार या मंत्रालय के परिवर्तन की नहीं, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सार्वजनिक जीवन में व्यापक परिवर्तन की है। इस प्रकार छात्र आंदोलन धीरे-धीरे व्यापक जन-आंदोलन में परिवर्तित हुआ। छात्र एवं युवा इस आंदोलन की प्रारंभिक सामाजिक शक्ति बने और उनके माध्यम से भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता तथा राजनीतिक जवाबदेही के प्रश्न व्यापक सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बने।

जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा

जयप्रकाश नारायण के लिए **सम्पूर्ण क्रांति** का अर्थ केवल सरकार बदलना या सत्ता प्राप्त करना नहीं था। उनके अनुसार यदि केवल राजनीतिक नेतृत्व बदल दिया जाए, जबकि सामाजिक संरचना, आर्थिक असमानता, प्रशासनिक कार्यप्रणाली और राजनीतिक संस्कृति में मूलभूत परिवर्तन न हो, तो वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं

होगा। इसलिए उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति को व्यापक सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। इसके प्रमुख आयाम राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शैक्षणिक और आध्यात्मिक थे। **राजनीतिक क्रांति** के स्तर पर वे चुनाव सुधार, सत्ता के विकेंद्रीकरण और राजनीतिक पदों की जवाबदेही पर बल देते थे।

सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का संबंध सामाजिक असमानताओं, भूमि एवं आजीविका तथा आर्थिक संसाधनों के अधिक न्यायपूर्ण वितरण से था। **शैक्षणिक और सांस्कृतिक परिवर्तन** में शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर नागरिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का माध्यम माना गया। वहीं **नैतिक एवं आध्यात्मिक आयाम** व्यक्ति के आचरण तथा सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों से संबंधित था। इस पूरी अवधारणा के केंद्र में **लोकशक्ति** थी—अर्थात् संगठित, जागरूक और अहिंसक नागरिक शक्ति, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक सहभागी और उत्तरदायी बनाने में भूमिका निभाए।

सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन और भारतीय राजनीतिक व्यवस्था

सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन ने तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष **भ्रष्टाचार, प्रशासनिक जवाबदेही, चुनावी सुधार, सत्ता के केंद्रीकरण और जनसहभागिता** जैसे प्रश्नों को प्रमुखता से रखा। आंदोलन की दृष्टि में केवल सरकार का परिवर्तन पर्याप्त नहीं था; राजनीतिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली और राजनीतिक संस्कृति में भी सुधार आवश्यक था। इसी कारण जयप्रकाश नारायण ने राजनीतिक सत्ता के साथ-साथ नागरिक समाज और जनता की भूमिका को भी महत्व दिया। आंदोलन ने सरकार और जनता के संबंधों को केवल चुनावी प्रतिनिधित्व तक सीमित न रखकर निरंतर सार्वजनिक जवाबदेही के संदर्भ में देखने की आवश्यकता पर बल दिया।

आंदोलन के विस्तार के साथ विभिन्न विपक्षी दलों के बीच सहयोग बढ़ा। 1974-75 में जयप्रकाश नारायण स्वयं किसी राजनीतिक दल के औपचारिक नेता न होते हुए भी विभिन्न विपक्षी समूहों को एक साझा राजनीतिक मंच पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। 1975 में आंदोलन और तत्कालीन सत्ता के बीच संघर्ष अधिक तीव्र हुआ। 25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा और उसके बाद जयप्रकाश नारायण सहित प्रमुख विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी ने आंदोलन को नागरिक स्वतंत्रता, राजनीतिक अधिकार और लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वतंत्रता के प्रश्न से जोड़ दिया।

आंदोलन और भारतीय लोकतंत्र

सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन ने भारतीय लोकतंत्र में **नागरिक सहभागिता** के प्रश्न को विशेष महत्व दिया। आंदोलन की सक्रियता में छात्रों, युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और विभिन्न राजनीतिक समूहों की भागीदारी रही। इससे यह विचार मजबूत हुआ कि लोकतंत्र केवल निश्चित अंतराल पर होने वाले चुनावों तक सीमित नहीं है, बल्कि नागरिकों की निरंतर सार्वजनिक भागीदारी और शासन की निगरानी भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है। बिहार आंदोलन में छात्रों की प्रारंभिक भूमिका और बाद में व्यापक जनभागीदारी इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण उदाहरण रही। 1975-77 का आपातकाल इस आंदोलन के लोकतांत्रिक संदर्भ को और महत्वपूर्ण बनाता है। राजनीतिक नेताओं की गिरफ्तारी, नागरिक स्वतंत्रताओं पर प्रतिबंध और राजनीतिक गतिविधियों के सीमित होने की परिस्थितियों ने लोकतांत्रिक अधिकारों तथा संस्थागत स्वतंत्रता के प्रश्न को राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श में प्रमुख बनाया। मार्च 1977

में आपातकाल समाप्त होने के बाद हुए लोकसभा चुनावों ने मतदाताओं को केंद्र की तत्कालीन सत्ता के संबंध में अपना निर्णय व्यक्त करने का अवसर दिया। इस प्रकार सम्पूर्ण क्रांति की विरासत को नागरिक राजनीतिक सक्रियता, लोकतांत्रिक अधिकारों और सत्ता की जवाबदेही के संदर्भ में देखा जा सकता है।

आंदोलन का दीर्घकालीन राजनीतिक प्रभाव

सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन का दीर्घकालीन राजनीतिक प्रभाव विशेष रूप से 1977 के लोकसभा चुनाव और उसके बाद हुए सत्ता परिवर्तन में दिखाई देता है। निर्वाचन आयोग के आँकड़ों के अनुसार 1977 में छठी लोकसभा के लिए 542 सीटों पर चुनाव हुआ। बिहार की 54 लोकसभा सीटों में भारतीय लोक दल ने सभी 52 सीटें जीतीं जिन पर उसने चुनाव लड़ा और कुल 52 सीटें प्राप्त कीं; यह उस चुनाव में बिहार में गैर-कांग्रेसी राजनीतिक परिवर्तन की स्पष्ट अभिव्यक्ति थी। 1977 में विभिन्न विपक्षी शक्तियों के एकीकरण से जनता पार्टी का गठन हुआ और केंद्र में पहली बार कांग्रेस के अतिरिक्त एक व्यापक गैर-कांग्रेसी राजनीतिक समूह ने सरकार बनाई। जयप्रकाश नारायण इस राजनीतिक एकीकरण के प्रमुख नैतिक एवं वैचारिक प्रेरकों में थे, यद्यपि उन्होंने स्वयं कोई सरकारी पद ग्रहण नहीं किया। इस परिवर्तन ने भारतीय राजनीति में विपक्षी एकता, गठबंधन और वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति की संभावना को अधिक स्पष्ट किया। आगे चलकर भारतीय राजनीति में बहुदलीय प्रतिस्पर्धा और गठबंधन सरकारों के विकास को समझने में 1977 का राजनीतिक परिवर्तन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संदर्भ बन गया।

समकालीन प्रासंगिकता

सम्पूर्ण क्रांति की समकालीन प्रासंगिकता मुख्यतः लोकतांत्रिक जवाबदेही, नागरिक सहभागिता, भ्रष्टाचार-विरोधी विमर्श, विकेंद्रीकरण और युवा राजनीतिक सक्रियता से संबंधित है। जयप्रकाश नारायण की राजनीतिक अवधारणा में लोकतंत्र का अर्थ केवल चुनावी प्रक्रिया नहीं था; वे राजनीतिक व्यवस्था में जनता की निरंतर भूमिका, सत्ता के विकेंद्रीकरण और सार्वजनिक पदों की जवाबदेही को भी आवश्यक मानते थे। उनकी लोकशक्ति की अवधारणा नागरिकों को लोकतांत्रिक व्यवस्था के सक्रिय सहभागी के रूप में देखने का आधार प्रदान करती है। आज के संदर्भ में इस अवधारणा का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि लोकतांत्रिक शासन में पारदर्शिता, जवाबदेही, नागरिक भागीदारी, चुनावी सुधार और स्थानीय स्तर पर निर्णय-प्रक्रिया में जनता की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण विषय बने हुए हैं। इसी प्रकार युवाओं की राजनीतिक सक्रियता को समझने के लिए 1974 के छात्र आंदोलन का अनुभव ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करता है। हालांकि समकालीन परिस्थितियाँ 1970 के दशक से भिन्न हैं, फिर भी जयप्रकाश नारायण का यह प्रश्न प्रासंगिक बना हुआ है कि लोकतांत्रिक संस्थाओं की प्रभावशीलता केवल संवैधानिक संरचनाओं पर नहीं, बल्कि जागरूक नागरिक सहभागिता और सार्वजनिक जवाबदेही पर भी निर्भर करती है।

प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया कि सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन केवल तत्कालीन बिहार सरकार के विरुद्ध एक छात्र-आंदोलन नहीं था, बल्कि 1970 के दशक में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, प्रशासनिक कार्यप्रणाली और लोकतांत्रिक राजनीति से संबंधित व्यापक असंतोष की अभिव्यक्ति था। 18 मार्च 1974

को बिहार में छात्रों का आंदोलन भ्रष्टाचार, मूल्य-वृद्धि और बेरोजगारी जैसे प्रश्नों से प्रारंभ हुआ तथा जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में इसे व्यापक राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन का स्वरूप मिला। 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान में जयप्रकाश नारायण द्वारा सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान इस आंदोलन का निर्णायक वैचारिक चरण था। उन्होंने परिवर्तन को केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित न रखते हुए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शैक्षणिक और आध्यात्मिक जीवन से जोड़ा।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि आंदोलन का एक प्रमुख योगदान **लोकतांत्रिक सहभागिता और राजनीतिक जवाबदेही के प्रश्न को व्यापक जन-विमर्श का विषय बनाना** था। छात्रों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने उन्हें सार्वजनिक प्रश्नों और राजनीतिक प्रक्रिया से जोड़ा। आंदोलन ने सत्ता और नागरिक समाज के संबंध, प्रशासन की जवाबदेही, चुनाव सुधार तथा भ्रष्टाचार जैसे प्रश्नों को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में रखा। आधुनिक राजनीतिक चिंतन के अध्ययनों में भी 1970 के दशक के इन आंदोलनों को सहभागी लोकतंत्र की माँग के संदर्भ में देखा गया है।

राजनीतिक स्तर पर इसका सबसे स्पष्ट दीर्घकालीन परिणाम **1977 का सत्ता परिवर्तन** रहा। निर्वाचन आयोग के आँकड़ों के अनुसार 1977 में 542 लोकसभा सीटों के लिए चुनाव हुआ; बिहार की 54 सीटों में भारतीय लोक दल ने 52 सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस को कोई सीट नहीं मिली। यह परिणाम आंदोलन की समस्त राजनीतिक माँगों की प्रत्यक्ष स्वीकृति के रूप में नहीं, बल्कि उस समय के व्यापक राजनीतिक परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण चुनावी परिणाम के रूप में समझा जाना चाहिए। विभिन्न विपक्षी शक्तियों का एक साथ आना और केंद्र में गैर-कांग्रेसी सरकार का गठन भारतीय राजनीति में विपक्षी एकता तथा वैकल्पिक सत्ता की संभावना के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा।

समग्र रूप से शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्पूर्ण क्रांति की ऐतिहासिक भूमिका को दो स्तरों पर समझा जाना चाहिए—पहला, **लोकतांत्रिक संस्थाओं की जवाबदेही और नागरिक सहभागिता के प्रश्न को मजबूत करना**, और दूसरा, **भारतीय राजनीति में सत्ता के वैकल्पिक केंद्रों तथा विपक्षी राजनीतिक एकता के विकास को प्रभावित करना**। साथ ही, आंदोलन की सीमाओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है; इसे भारतीय लोकतंत्र में सभी समस्याओं के समाधान के रूप में नहीं देखा जा सकता। इसका स्थायी महत्व मुख्यतः उसके द्वारा उठाए गए लोकतांत्रिक, राजनीतिक और नैतिक प्रश्नों में निहित है।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर लोकतांत्रिक संस्थाओं में **जवाबदेही, पारदर्शिता और नागरिकों के प्रति उत्तरदायित्व** को निरंतर मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। राजनीतिक और प्रशासनिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता तथा सार्वजनिक निगरानी के प्रभावी साधनों को मजबूत करना लोकतांत्रिक विश्वास के लिए उपयोगी हो सकता है। सम्पूर्ण क्रांति के अनुभव से यह भी स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र की प्रभावशीलता केवल संवैधानिक संस्थाओं पर निर्भर नहीं करती, बल्कि जागरूक नागरिक सहभागिता भी आवश्यक है।

दूसरे, **राजनीतिक सहभागिता को केवल चुनावी प्रक्रिया तक सीमित न रखते हुए** नागरिकों को स्थानीय शासन, सार्वजनिक विमर्श और नीतिगत प्रक्रियाओं में भाग लेने के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। विशेष रूप

से युवाओं के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं, संविधान, नागरिक अधिकारों और सार्वजनिक नीति से संबंधित शिक्षा तथा संवाद के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। 1974 के बिहार आंदोलन में छात्रों की भूमिका इस बात का ऐतिहासिक उदाहरण है कि युवा सार्वजनिक प्रश्नों को राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बना सकते हैं।

तीसरे, **स्थानीय स्तर पर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण** को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। ग्राम पंचायतों और शहरी स्थानीय निकायों को पर्याप्त कार्य, वित्तीय संसाधन और प्रशासनिक क्षमता उपलब्ध कराने के साथ स्थानीय निर्णय-प्रक्रिया में नागरिकों की वास्तविक भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। यह जयप्रकाश नारायण की लोकशक्ति और विकेंद्रीकृत लोकतंत्र की अवधारणा के साथ भी संबद्ध है।

अंततः, राजनीतिक दलों और जनप्रतिनिधियों के स्तर पर **आंतरिक लोकतंत्र, सार्वजनिक जवाबदेही और राजनीतिक नैतिकता** को मजबूत किया जाना चाहिए। सम्पूर्ण क्रांति का अध्ययन यह संकेत देता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थिरता केवल संस्थागत नियमों से नहीं, बल्कि राजनीतिक नेतृत्व, नागरिक समाज और जनता के बीच उत्तरदायित्वपूर्ण संबंधों से भी जुड़ी होती है।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि **जयप्रकाश नारायण का सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय राजनीतिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक घटना** था। इसका उद्भव 1970 के दशक में व्याप्त महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक असंतोष जैसी परिस्थितियों के बीच हुआ, लेकिन जयप्रकाश नारायण ने इसे केवल तत्कालीन सरकार के विरोध तक सीमित नहीं रखा। 5 जून 1974 को पटना के गांधी मैदान में सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान करते हुए उन्होंने राजनीतिक परिवर्तन को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और नैतिक परिवर्तन से जोड़ने का प्रयास किया।

प्रस्तुत अध्ययन से यह भी सामने आया कि सम्पूर्ण क्रांति का केंद्रीय विचार **लोकशक्ति, जनसहभागिता, विकेंद्रीकरण और राजनीतिक जवाबदेही** से संबंधित था। इस दृष्टि से आंदोलन ने लोकतंत्र की पारंपरिक चुनाव-केंद्रित समझ के साथ नागरिक सहभागिता का व्यापक प्रश्न जोड़ा। समकालीन राजनीतिक विचार के अध्ययन भी जयप्रकाश नारायण के 1970 के दशक के आंदोलन को सहभागी लोकतंत्र की माँग के संदर्भ में देखते हैं। आंदोलन की राजनीतिक परिणति 1977 के लोकसभा चुनाव और उसके बाद हुए सत्ता परिवर्तन में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। निर्वाचन आयोग के आधिकारिक आँकड़े 1977 के चुनाव को छठी लोकसभा के चुनाव के रूप में दर्ज करते हैं, जिसमें 542 सीटों के लिए चुनाव हुआ। इस चुनाव ने केंद्र की राजनीति में पहली बार व्यापक गैर-कांग्रेसी सत्ता के गठन का मार्ग प्रशस्त किया। इसलिए सम्पूर्ण क्रांति को भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में केवल एक विरोध आंदोलन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है; यह **राजनीतिक सहभागिता, विपक्षी एकता, सत्ता की जवाबदेही और लोकतांत्रिक विकल्प की खोज** से जुड़ी ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

हालाँकि सम्पूर्ण क्रांति अपने घोषित व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के सभी उद्देश्यों को संस्थागत रूप से प्राप्त नहीं कर सकी, फिर भी इसके द्वारा उठाए गए प्रश्न भारतीय लोकतांत्रिक विमर्श में लंबे समय तक बने रहे। इसलिए इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की ऐतिहासिक महत्ता मुख्यतः **सत्ता परिवर्तन से अधिक लोकतांत्रिक पुनर्विचार की प्रक्रिया** में निहित थी। इसने यह प्रश्न सामने रखा कि लोकतंत्र को प्रभावी बनाने के लिए केवल निर्वाचित सरकार पर्याप्त है या उसके साथ जागरूक नागरिक, उत्तरदायी

राजनीतिक संस्थाएँ, सक्रिय विपक्ष और विकेंद्रीकृत जनसहभागिता भी आवश्यक हैं। यही प्रश्न सम्पूर्ण क्रांति को भारतीय राजनीतिक चिंतन और लोकतांत्रिक इतिहास के अध्ययन में आज भी प्रासंगिक बनाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ऑस्टिन, जी. (1966). *भारतीय संविधान: राष्ट्र की आधारशिला*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. ऑस्टिन, जी. (1999). *लोकतांत्रिक संविधान का संचालन: भारतीय अनुभव*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. बारिक, आर. (1977). *जेपी आंदोलन की राजनीति*, रेडिएंट पब्लिशर्स।
4. भट्टाचार्य, ए. (1978). *जयप्रकाश नारायण: एक राजनीतिक जीवनी*, विकास पब्लिशिंग हाउस।
5. चंद्र, बी. (2010). *लोकतंत्र के नाम पर: जेपी आंदोलन और आपातकाल*, पेंगुइन बुक्स इंडिया।
6. चंद्र, बी., मुखर्जी, एम., एवं मुखर्जी, ए. (2008). *स्वतंत्रता के बाद भारत: 1947-2000*, पेंगुइन बुक्स इंडिया।
7. दास गुप्ता, एन. (1997). *जयप्रकाश नारायण का सामाजिक एवं राजनीतिक सिद्धांत*, साउथ एशियन पब्लिशर्स।
8. देवसहायम, एम. जी. (2012). *जेपी आंदोलन, आपातकाल और भारत की दूसरी आज़ादी*, वितस्ता पब्लिशिंग।
9. दुबे, एस. एम. (1997). *सम्पूर्ण क्रांति: जेपी का मार्ग*, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
10. गूहा, आर. (2007). *भारत गांधी के बाद: विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का इतिहास*, मैकमिलन।
11. जयप्रकाश नारायण. (1936). *समाजवाद क्यों?*, अखिल भारतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी।
12. जयप्रकाश नारायण. (1957). *समाजवाद से सर्वोदय की ओर*, सर्वोदय संघ प्रकाशन।
13. जयप्रकाश नारायण. (1959). *भारतीय राज्य-व्यवस्था के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव*, सर्वोदय संघ प्रकाशन।
14. जयप्रकाश नारायण. (1961). *जनता के लिए स्वराज*, अखिल भारत सर्वोदय संघ प्रकाशन।
15. जयप्रकाश नारायण. (1961). *सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप*, सर्वोदय प्रकाशन।
16. जयप्रकाश नारायण. (1977). *कारागार डायरी*, पॉपुलर प्रकाशन।
17. जयप्रकाश नारायण. (1978). *सम्पूर्ण क्रांति की ओर*, (बी. ब्रह्मानंद, सं.). पॉपुलर प्रकाशन।
18. कोहली, ए. (1990). *लोकतंत्र और असंतोष: भारत के शासन-संकट का विकास*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
19. कृष्ण, ए. वी. (2011). *स्वतंत्रता के बाद भारत: भारतीय राजनीति को समझना*, पियर्सन एजुकेशन इंडिया।
20. मजूमदार, बी. (2025). सम्पूर्ण क्रांति: जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन, *NBPA Journal for Arts, Humanities & Social Sciences*, 1(2), p. 26।
21. प्रसाद, बी. (सं.). (2000). *जयप्रकाश नारायण: चयनित रचनाएँ, खंड 7: 1954-1960*, मनोहर।
22. राज, एस. एल. (1986). *सम्पूर्ण क्रांति: जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक दर्शन का अंतिम चरण*, सत्य निलयम पब्लिकेशन्स।

23. पवार, डी. एस. आर. (1983). *जयप्रकाश नारायण का सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन: सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा के विशेष संदर्भ में* (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोधप्रबंध, पुणे विश्वविद्यालय)।
24. बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय. (2016). *बिहार आंदोलन-1974* (खंड 7, भाग 1). बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय।
25. भारत निर्वाचन आयोग. (1977). *1977 के आम चुनाव: छठी लोकसभा के लिए सांख्यिकीय रिपोर्ट*, भारत निर्वाचन आयोग।



EARN YOUR

MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED

Excites and energizes your Child's body

GREEN

Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE